[illegible]

[illegible]

तृतीय अध्याय

"काका हाथरसी के काव्य में हास्य - व्यंग्य"

हास्य व्यंग्य को एक गाड़ी के दो पहिए माननेवाले काका हाथरसी कहते हैं कि, अकेला व्यंग्य चुभन पैदा करता है और अकेला हास्य गुदगुदी। काकाजी के काव्य में हास्य और व्यंग्य दोनों साथ-साथ चलते हैं। इन दोनों पहियों को एक समान चलाकर काकाजी ने काव्य की गाड़ी को संतुलित रखा है। उनके काव्य में हास्य-व्यंग्य के अलग-अलग उदाहरण हम पाते हैं। पिछले पचास वर्षों से काकाजी अपने इसी हास्य-व्यंग्य के सहारे श्रोताओंको बाँधकर रखते आये हैं। उनके काव्य में सिर्फ हास्य के और सिर्फ व्यंग्य के चाहे जितने उदाहरण क्यों न आए, उनका व्यंग्य चुभन पैदा करनेवाला नहीं है और न ही उनका हास्य एक भद्दा मजाक। तभी तो इतने सालों तक वह श्रोताओं को बाँध कर रख सका हैं। सिर्फ हमारे देश में ही नहीं, विदेशों में भी उनकी कविताएँ लोगों को आकर्षित करने में सफल हुई।

हास्य-व्यंग्य में साहित्य लिखनेवाले साहित्यिकों को उतना सम्मान नहीं दिया जाता, जितना उन्हें मिलना चाहिए। अगर देखा जाए तो लोगों को हँसाना जितना आसान है, उतना ही मुश्कील भी है। लेकिन हास्य-व्यंग्य के जनक माने जानेवाले काकाजी पिछले पाँच दशकों से लोगों को हँसाते आये हैं। इतने वर्षों तक लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर सिर्फ कविताओं के सहारे बाँधे रखना आसान नहीं है।

काकाजी ने हास्य-व्यंग्य के ज्ञान को अपनी पहली दौलत माना है। वे कहते हैं -

"पहली दौलत मानते,
हास्य व्यंग्य का ज्ञान,
दूजी दाढ़ी मानिए, तीजी काकी जान।" [१]

---

१. काका हाथरसी - "लूटनीति मंथन करी" (पृष्ठ ८८)।

जीवन में संघर्ष, दुःख तो आते ही रहते है। लेकिन अगर उनका डटकर मुकाबला करें तो ही जीवन को सफलता से जीया जा सकता है। काकाजी के पास इसका नुस्खा भी है। वे कहते हैं -

"नियमपूर्वक हास्य रस, जो पीते हैं रोज,
हलका हो जाता सभी, गम-गुबार का बोझ।
गम-गुबार का बोझ, हँसी नहिं जिनको आती,
उनकी सूरत, मनहूसों जैसी बन जाती।
नहीं लगा सकते जो, खुलकर हास्य - ठहाके,
प्राप्त करो यह कला, पास काका के आके।" [१]

काकाजी ने यहाँ तक कहा है कि, आज तक कई प्रकार के पर्व मनाए जा चुके हैं। उसी प्रकार हास्य - पर्व भी मनाया जाना चाहिए। मनुष्य जितना हँसता है, उतना उसका खून बढ़ता है यही बात बताते हुए काकाजी मानते हैं कि, हास्य रस की बदौलत ही बुढ़ापा पास नहीं फटकता।

"जर-जमीन - जोरू सभी काका कवि के पास,
जब तक जीएं हास्य का करते रहें विकास।" [२]

इस बात को काकाजी अब तक निभाते रहे हैं। आशा है आगे भी वे श्रोताओं को, पाठकों को इसी तरह हँसाते रहेंगे।

उनके काव्य में हास्य-व्यंग्य के इतने अलग-अलग उदाहरण हम पाते हैं कि, उन सभी को समेटना गागर में सागर भरने के समान है। डा॰ गिरिराजशरण अग्रवाल जी कहते हैं - "काका की कलम का कमाल कार से लेकर बेकार तक, शिष्टाचार से लेकर भ्रष्टाचार तक, परिवार से लेकर पत्रकार तक, विद्वान से लेकर गँवार तक, फैशन से राशन तक, रिश्वत से त्याग तक और कमाई से महँगाई तक देखने को मिलता है॥ तात्पर्य यह है कि, उन्होंने प्रत्येक

१॰ काका हाथरसी - "कक्के के छक्के" (पृष्ठ १००)।

२॰ काका हाथरसी - "काका का दरबार"(पृष्ठ ७७)।

क्षेत्र में धड़ल्ले से प्रवेश किया है।"[1]

काकाजी के काव्य में पाये जानेवाले अलग-अलग हास्य-व्यंग्य के उदाहरणों को हम निम्नलिखित रूप में विभाजित कर सकते हैं -

१. काका के काव्य का पहला शिकार : काकीजी -

अपनी पत्नी पर हास्य-व्यंग्य की कविताएँ करना हास्य-व्यंग्य कवियों की एक प्रवृत्ति रही है। काकाजी कैसे अपवाद हो सकते हैं? उनके पूरे साहित्य में कभी काकाजी का सौंदर्य वर्णन, कभी उनके प्रति सम्मान, कभी व्यंग्य, कभी प्यार झलकता है। काकाजी पर लिखी कविताओं के बिना काकाजी का काव्य अधुरा है।

काकाजी के सौंदर्य का वर्णन करते हुए काकाजी ने "नख-शिख वर्णन" कविता में लिखा हैं -

"भिंडी जैसी भृकुटी है, तुरई जैसी नाक।
जामुन जैसी पुतलियाँ, आँख आम की फाँक ।।
कच्चे पापड़ से पलक, ढँके उघारैं नैन।
मन में कूदैं मेंढ़का, मटकायो जब सैन ।।"[2]

ऐसी पत्नी को घर में पाकर कौन खुश रह सकता है? काकाजी तो बहुत ही ग्रस्त हो गये हैं। "मत पूछो मेरा हाल" कविता में अपने दिल की व्यथा को काकाजी ने खोलकर रखा है -

"मत पूछो मेरा हाल, सखे!
काकी घर में आई जब से, ये पिचक गये हैं गाल, सखे!!

× × ×

मैके जाने का नोटिस देकर, मुझको नित्य डराती है,
लेकिन मोटर के अड्डे से, वापस घर को आ जाती है।

१. सं. डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "काका की विशिष्ठ रचनाएँ" (पृष्ठ ३०)।
२. काका हाथरसी - "काका - काकी के लव-लेटर्स" (पृष्ठ २२)।

कोई ऐसी तरकीब बता, यह कट जाए जंजाल, सखे !
मत पूछो मेरा हाल सखे !! "[१]

काकाजी को जब १९८५ में "पद्मश्री" की उपाधि मिल गई तो बाकी सब लोग तो खुश हुए परंतु काकाजी के दिल में उथल-पुथल मच गई। "पद्मश्री पर शंका" में काका ने उनके दिल को इस तरह खोल दिया है -

"पद्मश्री हमको मिली, कृपा करी गिरीराज,
सब संबंधी खुश हुए, काकाजी नाराज।
काकीजी नाराज, साधकर चुप्पी बैठी,
पद्मश्री है कौन, बोलती ऐंठी-ऐंठी।
बच्चे बजा रहे है, हँसी-खुशी का डंका,
लेकिन काकी कर बैठी, काका पर शंका।"[२]

फिर भी काकाजी को जब किसी ने पूछा कि, यदि भगवान साक्षात दर्शन देकर आप से कहें कि, वर माँगो तो आप क्या माँगेंगे ? काकाजी कहते है कि, मेरे पास और सब कुछ है। बस् इतना कीजिए -

"बड़े-बड़े वरदान छोड़, छोटा सा वर दो,
अस्सी वर्षीय काकी को, सोलह की कर दो।"[३]

२. अन्य रिश्तेदारों पर हास्य-व्यंग्य -

काकाजी ने सिर्फ काकी पर ही लिखा है, ऐसी बात नहीं है॥ उन्होंने अन्य रिश्तेदारों पर भी फुलझड़ियाँ छोड़ी हैं।

---

१. सं.डा.गिरिराजशरण अग्रवाल - "काकादूत व अन्य कविताएँ" (पृष्ठ १९३)।
२. काका हाथरसी - "कक्के के छक्के" (पृष्ठ ११०)।
३. काका हाथरसी - "काका तरंग" (पृष्ठ ५४)।

पत्नी -

"पत्नी परिभाषा" कविता में पत्नी कैसी हो इसका वर्णन करते हुए काकाजी लिखते है -

"घोड़े पर भी चढ़ सके, पहन चुस्त पतलून,
खून बदन मे हो न हो, लम्बे हो नाखून ,
लम्बे हो नाखून, नियम से क्लब में जाये,
चौका-चूल्हा त्याग, चाट होटल में खाये,
कह काका कविराय, चाय में अंडा घोले,
तुम हिन्दी में बात करो, वह इंग्लिश बोले।" [१]

बहू -

काकाजी ने अच्छी बहू को खतरनाक साबित करते हुए उसपर शाब्दिक विनोद निर्मिती की है -

"खतरनाक वह बहू जो,
घर को स्वर्ग बनाय,
पति - पत्नी, माता-पिता, सब स्वर्गीय कहाय।" [२]

दामाद -

काकाजी ने दामाद को तो यम के समान ही माना है और उसपर भी छिंटाकसी की है। "जम और जंवाई" यह उनकी दामादपर व्यंग्य करनेवाली कविता है। उसमें वे कहते हैं -

"बडा भयंकर जीव है, इस जग में दामाद,
सास-ससुर को चूस कर, कर देता बरबाद।
कर देता बरबाद, आप कुछ पियों न खाओं,

१. काका हाथरसी - "काका की काकटेल" (पृष्ठ १९)।
२. काका हाथरसी - "लूटनीति मंथन करी" (पृष्ठ ४३)।

मेहनत करो, कमाओ, इसको देते जाओ।
कहं काका कविराय, सासरे पहुँची लाली,
भेजो प्रति त्योहार, मिठाई भर-भर थाली।" [१]

काकाजी ने तो दामाद को "लैटरबक्स" की उपमा दी है जो हमेशा भरता रहता है लेकिन खाली होता है। काकाजी कहते हैं कि, मृत्यु के समय अगर ससुर को दामाद दिखाई दें तो वह ससुर सीधा नर्क में जाता है। हिंदू कोड़ बील भी इनको अनुकूल ही आया। वह इनके ही माफिक पड़ा। इसमें पिता की सम्पत्ति पर पुत्री के हिस्से की बात कही है।

साला -

पत्नी का भाई वैसे ही समाज में बदनाम होता है, तभी तो उसे "साला" कहा जाता है। उसीपर काकाजी ने भी "मेरे सपनों की रानी" इस "आराधना" फिल्म की धुन पर पैरोड़ी लिखी है -

"मेरे वाइफ के भैया, कब जाएगा तू ?
यहाँ पड़ा-पड़ा, कब तक खायेगा तू ?
और कब तक मुझको, रुलायेगा तू ?
चला जा, तू चला जा ...." [२]

इसी प्रकार काकाजी ने साली, देवर, भाभी, ननद आदि सभी पर भी हास्य-व्यंग्य किया है।

३. शरीर के अवयव -

इतने सारे रिश्तेदार काकाजी के हास्य-तीरों के आगे बच न पाये तो शरीर के अवयव क्यों बचेंगे ? उन्होंने आँख, कान, नाक, मुँह, मुँछ, दाढी, दिल, हाथ, पेट, दाँत आदि सभी को अपनी कविताओं का निशाना बना

१. सं.डा.गिरिराजशरण अग्रवाल - "काका की विशिष्ठ रचनाएँ"(पृष्ठ ४९)।
२. सं.डा.गिरिराजशरण अग्रवाल - "पैरोडियाँ व कविताएँ" (पृष्ठ २७०)।

बना लिया है।

नाक -

"नासिका भेद" में काकाजी ने नाक का महत्व बताते हुए उसपर प्रयुक्त मुहावरों का वर्णन किया है।

"मुखमंडल सौंदर्य को आंक सके तो आंक,
आँख, गाल, ठुड्डी, अधर, सबसे ऊँची नाक।
सबसे ऊँची नाक, हो रही शोभित ऐसे,
ऋषीकेश गंगापर, लक्ष्मण झूला जैसे।
नाकेन्द्रिय के आगे, इन्द्रिय सभी हेट हैं,
आँख, कान में एक, नाक में डबल गेट हैं।" [१]

दिल -

दिल महिमा का बखान तो काकाजी ने भी किया है। "दिल दर्शन" में उन्होंने दिल खोलकर "दिल" के बारे में लिखा है -

"दिल का दर्शन करो तो चलो हमारे साथ,
सुनिए दिल की दास्ताँ, रखकर दिल पर हाथ।
रखकर दिल पर हाथ, बात हर दिल की सुनिये,
अपने दिल की बात, छिपाकर दिल में रखिए।
बनकर रहो दिलेर, भटको क्यों हो राही,
पहुँचोगे मंजिल पर, दिल दे रहा गवाही।" [२]

४. मानवेतर प्राणी -

काकाजी ने सिर्फ मनुष्यों को ही नहीं तो मानवेतर जीवों को भी अपनी कविता का लक्ष्य बनाया है। डा. गिरिराजशरण अग्रवाल जी कहते है -

---

१. सं. डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "काका की विशिष्ठ रचनाएँ" (पृष्ठ १११)।
२. - वही - (पृष्ठ १२५)।

"शायद ही कोई ऐसा कवि-लेखक होगा, जिसने किसी पशु-पक्षी पर काव्य अथवा लेख न लिखा हो।" [1] काकाजी भी इस कसौटि पर पूरे उतरते है।

उल्लू -

आज-कल हर एक काम करवाने के लिए किसी-न-किसी के सिफारिश की जरूरत होती है। किसी की चापलूसी करनी पड़ती है। काकाजी को लक्ष्मी जी के कृपा की आवश्यकता है तो उन्होंने लक्ष्मी जी के वाहन उल्लू की प्रशंसा की है -

"हे पक्षीराज !
हमारे नेताओं ने मोर को राष्ट्रीय पक्षी घोषित करके
जो भयंकर भूल की थी
उसका प्रायश्चित वे कर रहे हैं।
राष्ट्रीय पक्षी तो आप हैं
सब पक्षियों के बाप हैं।
क्योंकि आप के पट्ठे लाखों-करोडो हैं
जबकि मोर का पट्ठा एक भी नहीं।" [2]

गधा -

गधे पर काकाजी ने कई कविताएँ लिखी है। "गधे को मानपत्र" कविता में काकाजी ने लिखा हैं -

"हे मूर्खो के मुल्ला।
मूड़ आप को आता है तब,
क्लासीकल संगीत सुनाते,
हैंचू-हैंचू मधुर स्वरों में,
पाकिस्तानी राग सुनाते।

१. सं.डा.गिरिराजशरण - "काकदूत व अन्य कविताएँ" (पृष्ठ १५)।
२. सं.डा.गिरिराजशरण - "पैरोडियाँ व कविताएँ" (पृष्ठ २७)।

और दुलत्ती फेंक-फेंककर,
ताल-मात्रा भेद दिखाते।" [1]

वही गधा अगर मालिक को पिटवाने के मूड़ में आ जाए तो वह क्या करता है इसको बताते हुए "गदहा-भाव" में काकाजी कहते है -

"गदहा मालिक से कहे, तू क्या पिटे मोहि,
चल तो सही बजार में, मैं पिटवाऊँ तोहि।
मैं पिटवाऊँ तोहि, चाल तिरछी कुछ आड़ी
सूट-बूट धारी ने एक दुलत्ती झाड़ी।
बदले की भावना गधे ने तुरंत दिखाई
मालिक की हो गई सरे बाजार पिटाई।" [2]

कौआ -

"काकदूत" की भूमिका "काकमुख" में काकाजी ने कागाजी के महत्व को बताते हुए लिखा है - "पक्षियों में कौए का उतना ही महत्व है, जितना क्रिकेट में "बालर" का और अमेरिका में "डालर" का। यदि "काक" कोई "थर्डरेट" का पक्षी होता, तो बाप के भाई को काका (पंजाबी में लड़के को काका) नाम से सम्बोधित न किया जाता, "काका" कवि भी "कविराज" न कहलाते। काका की श्रेष्ठता के कारण ही श्राध्दों में अन्न का एक भाग उसके लिए निकालने की विधि शास्त्रों में दी गई है, जिसे "कगौर" कहते है। इसपर हंस या मोर ईर्ष्या करते हैं, तो किया करें।" [3]

इस "काकदूत" खण्डकाव्य में काकाजी से रुठकर काकी के मायके चले जाने का वर्णन है। उसे कैसे मनाया जाय और वापस लाया जाय यह सवाल उनके दिमाग को खाये जा रहा है और अचानक -

१. सं.डा.गिरिराजशरण अग्रवाल - "पैरोडियाँ व कविताएँ" (पृष्ठ ६८)।
२. काका हाथरसी - "कक्के के छक्के" (पृष्ठ १०५)।
३. सं.डा.गिरीराजशरण अग्रवाल - "काकदूत व अन्य कविताएँ"(पृष्ठ ७)।

"तभी डोलता-सा भविष्य के पृष्ठ, अचानक,
कांव-कांवकर बोल उठा, कोठे पर कागा।" [१]

उसे देखकर काकाजी के मन में एक कल्पना जाग उठी कि, क्यों न हम इसी के सहारे अपना संदेश काकी तक भेज दें। इसलिए उन्होंने उससे कहा -

"कालिदास के "मेघदूत" की भाँति मित्र! तुम,
"काका" कवि के "काकदूत" बन जाओ कागा।" [२]

इस प्रकार उससे संदेश भेजकर काकाने पूरा खण्डकाव्य ही मानो लिख दिया और उसे उसका नायक बना दिया।

चूहा -

चूहों को लेकर भी काकाजी ने कविता की है। "चूहिस्तान" में उन्होंने चूहों की मिटींग की जो कल्पना की है, उसमें एक बिल्ली किस तरह मिटींग को ध्वस्त कर देती है, इसका चित्रण किया है। उनकी मिटींग का वर्णन करते हुए काकाजी ने लिखा है -

"चूहों की मिटींग में बोले चूहानंद,
एक वर्ष के वास्ते, कर लो खाद्य-प्रबंध,
कर लो खाद्य-प्रबंध, न कोई रहे निठल्ला,
काट रहे हैं मानव, नई फसलका गल्ला।
कृषक और सरकार, अन्न भंडार बनाएँ,
चूक जाए जो चूहे, कर मल-मल पछताएँ।" [3]

भैंस -

भैंस के बारे में लिखते हुए तो काकाजी एकदम व्याकूल हो जाते हैं। "मेरी भैंस" में तो लिखते हैं -

---

१. सं. डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "काकदूत व अन्य कविताएँ" (पृष्ठ "काकदूत" का -२)
२. - वही - (पृष्ठ "काकदूत" का -३)
३. काका हाथरसी - "काका की [illegible]" ([illegible])

"तुम बिन सूना आंगन मेरा !
जल मिली रखी धोकर में,
तुम जा बैठी हो पोखर में !
बहुत हो चुकी जल-क्रीड़ा अब
घर पधारकर, करो बसेरा।" [1]

इसी प्रकार काकाजी ने मच्छर, खटमल, बिल्ली, बंदर, ऊँट, पिल्ला, चमगादड़ आदि पर भी काव्य रचना की है॥ इन सभी के बारे में लिखते-लिखते काकाजी उनमें खो जाते हैं परंतु फिर भी वे अपने आप को इसी विषय में बाँधे नहीं रखते।

५. साहित्यिक हास्य - व्यंग्य -

कवि सम्मेलन और कवि -

काकाजी ने आजतक देश-विदेशों में आयोजित कई कवि सम्मेलनों में हिस्सा लिया है। तभी तो उनका परिचय कवि सम्मेलनों में ख्याति प्राप्त कवि के रूप में कराया जाता है। जाहिर है कि, कवि और कवि सम्मेलन इस विषय ने भी उनके दिमाग की नस्ल को कुरेदना शुरू किया॥ उन्होंने अपने अनुभवों के सहारे इस विषय पर छिंटाकसी की है। स्वयं अपने ही बारे में काकाजी ने "मेरा परिचय" में लिखा है -

"मैं जन्मजात कवि "काका" हूँ, कोई न अबतक गुरू किया,
धरती पर आते ही मैंने, कविता में रोना शुरू किया॥
गर्भावस्था से ही मुझमें, कविता के अंकुर फूट रहे,
पर्या खड़ा होकर कूद रहे, अम्मा के छक्के छूट रहे।" [2]

१. काका हाथरसी - "काका-काकी के लव-लेटर्स" (पृष्ठ १४३)।
२. सं.डा.गिरिराजशरण अग्रवाल - "काकदूत व अन्य कविताएँ" (पृष्ठ २०३)।

काकाजी ने "काका दोहावली" में कवि कैसा होना चाहिए इसके बारे में अपने विचार प्रकट किये हैं -

"बड़े वही कविराय हैं, और सभी कवि व्यर्थ।
श्रोता जिनके काव्य का, समझ न पावें अर्थ।" [१]

काकाजी ने आज-कल के तुकबन्दीकार कवियों के बारे में लिखते हुए वह भी बताया है कि, किस तरह वे मंच पर जम नहीं पाते और अपमानित होते हैं।

"प्राप्त हो गया जब जरा तुकबन्दी का ज्ञान,
अपने मुँह करने लगे, अपना ही गुणगान।
अपना ही गुणगान, चुराकर कविता गाएँ,
बिन बुलाए काव्य-मंच पर आसन पाएँ।
विद्वानों के साथ, गोष्ठी का दिन आया,
टूट गया अभिमान, स्वयं को जीरो पाया॥" [२]

लगभग वही भाव उन्होंने अपनी एक अन्य कविता में सिर्फ तीन ही पंक्तियों में व्यक्त किया है -

"निज गुण बघारते,
पीट-पीटकर ढोल,
पहुँचे कविवर मंचपर, बोल हो गये गोल।" [3]

कई ऐसे कवि सम्मेलनों में आते है जिनकी रचनाओं को सुनकर लोग उबजाते हैं। उनका एक-एक पंक्ति को कई बार दोहराना, आँख फड़काना, गर्दन मोड़ना भी बोअर कर देता है और लोग उन्हें हूट करने लगते हैं। ऐसे कवियों का वर्णन काकाजी ने अपनी "संयोजक की तलाश" कविता में किया है।

---

१. सं.डा.गिरिराजशरण अग्रवाल - "काकदूत व अन्य कविताएँ" (पृष्ठ 62)।
२. काका हाथरसी - "काका शतक" (पृष्ठ ४५)।
३. काका हाथरसी - "लूटनीति मंथन करी" (पृष्ठ ८१)।

ऐसा कहा जाता है कि, "जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि।" इस कहावत का आधुनिक रूप काकाजी ने अपनी "जहाँ न पहुँचे रवि" रचना में किया है -

"काका जी ! अर्थ अभाव में, व्यर्थ रहे क्यों डोल,
सो जाए जब श्रीमती, उनका पर्स टटोल।
उनका पर्स टटोल, कला-प्रतिभा दिखलाओ,
पकड़े जाओ रंगे हाथ, तो यों समझाओ।
देवी ! तेरे बटुए में, न पहुँच पाया रवि,
रवि नहीं पहुँचे जहाँ, वहाँ पर पहुँच गया कवि।" [१]

"कवि जब सम्मेलन में जाते हैं तो उनका उत्साह से स्वागत किया जाता है, गले में हार डाले जाते हैं, प्रशंसा की जाती है, चाय पिलाई जाती है, फोटो खींचे जाते हैं, परंतु कवि-सम्मेलन समाप्त होते-होते कई संयोजक मैदान छोड़कर भाग जाते हैं क्योंकि उनके पास कवियों को "पत्रम्-पुष्पम्" प्रदान करने के लिए पूरा धन हीं होता। यहाँ तक कि, स्वागत-सत्कार करनेवाले भी पलायन कर जाते हैं। उस समय अपना बिस्तर-बोरिया उठवाने के लिए भी कोई व्यक्ति दिखाई नहीं देता। स्टेशन तक के लिए रिक्शा भी नहीं मिलता। परिणाम-स्वरूप बिस्तरा लादकर स्टेशन तक दौड़ लगानी पड़ती है।" [२] ऐसे कई अनुभव काकाजी ने पाये हैं। उन्होंने इस अनुभव को "कवि-सम्मेलन" कविता में तीखे व्यंग्य के साथ पेश किया है।

कवियों को लोगों के अलग-अलग व्यवहार का सामना किस तरह करना पड़ता है इसका उदाहरण काकाजी ने अपनी "उलझन" कविता में दिया है -

"सरस कविता लिखें तो
उच्च कोटि के कवि हमें निम्न कोटि का बताएँ,
क्लिष्ट कविता लिखें तो मंच पर हूट हो जाए।

---

१. काका हाथरसी - "कक्के के छक्के" (पृष्ठ २९)।

२. सं. डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "काका की विशिष्ठ रचनाएँ" (पृष्ठ ३८)।

हास्य-रस में लिखें
तो ईर्ष्यालु साहित्यकार हमको विदूषक बताएँ,
वीर रस की लिखे तो बिना युध्द के मंच पर कैसे जमाएँ। "[1]

"स्लीपर में साहित्य चर्चा" कविता में "नई कविता" पर व्यंग्य करते हुए काकाजी ने लिखा है -

"जो समझ में न आए, वही है कला का सार,
और वही सिध्दांत है, नई कविता का आधार।
शब्द ऐसे फिट करो, जो अपने स्थान से हिल न सकें
उनके अर्थ किसी भी कोश में मिल न सकें।
तुक मिलाने का कहीं भी किया कष्ट
तो नई कविता हो जाएगी भ्रष्ट॥ "[2]

विभिन्न वाद -

आधुनिक साहित्य में अनेक वाद प्रचलित हैं। जैसे - छायावाद, प्रगतिवाद, रहस्यवाद, प्रयोगवाद, मार्क्सवाद, आदि। इन सभी वादों से जुड़ा कवि उनमें उलझ जाता है।

छायावाद पर काकाजी ने सिर्फ "छाया" शब्द के सहारे शाब्दिक व्यंग्य किया है जिससे आधुनिक कवि की छायावादीतापर चोट पहुँचती है।

"कवि सम्मेलन चल रहा, चर्चा थी ना धूम,
छत्री ताने मंच पर, चढ़े महाकवि "सूप"।
चढ़े महाकवि सूप, चकित सब कवि-कवयित्री,
श्रोता हँसने लगे, देखकर उनकी छत्री।
संयोजक ने शंका सबकी, दूर करा दी,
अहो भाग्य ! आ गये "सूपकवि" छायावादी। "[3]

१. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "पैरोडियाँ व कविताएँ" (पृष्ठ 23)।
२. - वही - (पृष्ठ १९९)।
३. काका हाथरसी - "कुक्के के छक्के" (पष्ठ २८)।

"रहस्यवाद" पर व्यंग्य करते हुए काकाजी कहते हैं कि, जिस कविता को समझा न जा सके वह रहस्यवाद है। "रहस्यवाद" इस कविता में काकाजी लिखते हैं -

"माईट इज राईट, ब्लैक इज व्हाइट,
यू आर रोंग, आई एम राईट।
टेकिंग हाई, ट्राई - ऑन - ट्राई,
आई एम मिर्च, यू आर खटाई।
समझे इस कविता की गहराई ?
इसे "मिस्टी सिज्म" यानी "रहस्यवाद" कहते हैं पुरन्दरभाई।"[१]

काकाजी ने नई कवितापर हमेशा अपनी कविताओं में व्यंग्य किया है। अपनी "शून्यवाद" कविता में एक बंगाली व्यक्ति के द्वारा काकाजी ने लिखा है -

"क्या हा आजकल का कवि-गीतकार ?
घिसा-पिटा भाव लेकर
माईक के सामने शिर हिलाता है
हिन्दी की दाल में उर्दू का चाउल मिलाकर
खिचड़ी पकाता है, बेसुरा गाता है।
श्रृंगारी कविता में
कबीर का निर्गुनवाद मिलाकर
श्रोता को "बेकूफ" बनाता है।"[२]

इसके साथ ही "प्रयोगवाद" पर भी काकाजी ने "स्टैण्डर्ड" कविता में व्यंग्य करते हुए लिखा है -

"हिन्दी के हिमायती बनकर,
संस्थानों से नेह जोडिए।
किन्तु आपसी बातचीत में
अंग्रेजी की टांग तोडिए।।

---

१. काका हाथरसी - "काका के कारतूस" (पृष्ठ १०९.)।
२. सं. डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "पैरोडियाँ व कविताएँ" (पृष्ठ ७८९)।

इस "प्रयोगवाद" कहते हैं
समझो, गहराई में जाओ।
कुछ तो स्टैण्डर्ड बनाओ।।"[1]

इसी प्रकार काकाजी ने "मार्क्सवाद" पर व्यंग्य करते हुए आज के छात्रों की प्रवृत्ति को दर्शाया है -

"तालों में फूट ताल, स्वरों में विवादी हूँ,
मारधाड, धौलधप्पा, धक्कों का आदि हूँ।
चाकू दिखला करके, कापी परीक्षक को,
मार्क्स बढ़वा लूँगा, मैं छात्र "मार्क्सवादी" हूँ।"[2]

इसी के साथ काकाजी ने साहित्य के क्षेत्र में प्रचलित अन्य भी वादोंपर छिंटाकशी की है।

<u>रस</u> -

साहित्य में नौ रस माने जाते हैं। "नव रस निरूपण" इस कविता में काका का वाग्वैदग्ध्य देखने को मिलता है। वे कहते हैं -

"लाल-मिर्च में करुण रस का रहता भंडार,
रसगुल्लों में रम रहे, शान्त और शृंगार।
शान्त और शृंगार, तनिक जिह्वा पर रख लो,
पिपरमेण्ट में अद्भुत रस के दर्शन कर लो।"[3]

काकाजी ने रस-संख्या का प्रश्न कई बार उठाया है। उन्होंने 'रस-रिसर्च' में नव रसों के साथ भोजन के षट्रस और प्रेम रस, आमरस, गोरस, स्वरस, सोमरस, दरस, सारस, भक्तिरस, हाथरस और बनारस आदि को जोडकर २६ रस बताये हैं।

---

१. सं. डा. गिरिराजशरण अग्रवाल" - "काकदूत व अन्य कविताएँ" (पृष्ठ ४२)।
२. - वही - (पृष्ठ २४२)।
३. काका हाथरसी - "काका की फुलझडियाँ" (पृष्ठ १०७)।

फिर भी इन सभी रसों में काकाजी हास्य-रस को ही रस का राजा स्वीकार करते हैं -

"खुल जाती हैं हास्य से
दिल दिमाग की नस्स,
रस का राजा हास्य-रस, और सभी नीरस्स।" [१]

इस प्रकार साहित्य के क्षेत्र पर सभी दृष्टियों से विचार कर काकाजी ने व्यंग्य किया है।

६. बुध्दिजीवी -

समाज का एक वर्ग बुध्दिजीवी वर्ग है। "बुध्दिजीवी" कविता में काकाजी एक उदाहरण के सहारे उस वर्ग पर तीखा व्यंग्य करते है। एक थोक व्यापारी को जब छापामार दस्ते के अफसर ने जमाखोरी के केस में पकड़ा और उससे पूछा -

"वाह लाला !
स्टाक में इतना घोटाला
खाते में एक हजार,
हाते में दस हजार ?" [२]

तो उसका उत्तर कितना मर्मभेदी और बुध्दिजीवी वर्ग पर व्यंग्य करनेवाला है देखे -

"एक शून्य का ही तो फर्क है सरकार,
हम क्या चीज है
अच्छे - अच्छे मचा रहे हैं लूट-खसोट
पद्मश्री के यहाँ पकड़े गये थे

१. काका हाथरसी - "कूटनीति मंथन करी" (पृष्ठ ४५)।
२. सं.डा.गिरिराजशरण अग्रवाल - "पैरोडियाँ व कविताएँ" (पृष्ठ १२६)।

आठ लाख के नोट।
जैसी बुध्दि से प्रेरणा मिलती है,
वैसा लिख देते हैं हिसाब
अपना तो बुध्दिजीवी है साब !" [१]

७· डाकू और आत्मसमर्पण -

भारत में आज भी डाकूओं की समस्या ज्यों की त्यों बनी हुई है। इस समस्या के निराकरण के जितने भी प्रयास किये गये, सब असफल रहे। इसके बारे में काकाजी ने "काकदूत" में अपने विचार प्रकट किये है। काकाजी कहते हैं कि, चम्बल के पहाड़ों में जो डाकू रहते हैं वे अवसर पाकर धनी, सेठ लोगों का अपहरण कर बडी रकम की माँग करते है। कुछ आत्मसमर्पण करते हैं, कुछ पकड़े जाते हैं, कुछ मारे जाते हैं लेकिन फिर भी दिन-ब-दिन इनकी संख्या बढती ही जा रही हैं। उनके आत्मसमर्पण में नेताओं पर व्यंग्य करते हुए "डाकू श्रेय समस्या" में काकाजी ने लिखा है कि, डाकूओं ने एक योजना बना ली -

"आत्मसमर्पण करके हो जाओ गिरफ्तार,
गांधीजी के तस्वीर के सामने डाल दो हथियार !
पब्लिसिटी पाओ, गुडविल बनाओ,
इन्टरव्यू दो, अभिनंदन पाओ।
अगले चुनावों में हो जाना खड़े,
जीत जाओगे तुम, हार जायेंगे बड़े-बड़े।
हाथों में होगी शासन की लगाम,
पुलिसवाले दूर से ही झुकायेंगे सलाम।
भव बन्धन के टूट जायेंगे तागे,
जो तुम्हारे पीछे भागते थे, अब भागेंगे आगे।" [२]

१· सं·डा·गिरिराजशरण अग्रवाल - "पैरोडियाँ व कवितायें" (पृष्ठ १२६)।
२· - वही - (पृष्ठ ८७)।

"काका किसी को भी डाकुओं का आत्मसमर्पण का श्रेय नहीं देते। वे व्यंग्य के धरातल पर इस वस्तुस्थिति को उजागर करते हैं कि, डाकुओं को वर्तमान स्थिति का अवलोकन करके आत्मसमर्पण करने में ही अपना हित दृष्टिगोचर हुआ, क्योंकि अगले चुनाव जीतकर वे अपनी रही-सही कसर पूरी कर लेंगे। "डाकू श्रेय समस्या" कविता में इस स्थिति पर व्यंग्य है।" [१]

८. क्रिकेट -

आज-कल क्रिकेट का मौसम है। जहाँ देखो, हर कोई कान से रेडिओं लगा कमेंट्री सुन रहा है, दफ्तर से छुट्टी ले टीवी पर मैच देख रहा है। काकाजी अपनी कविता "किरकिट कौ भूत" में लिखते हैं -

"कहा बतावें भैया जी !
हमारौ बुढ़ापौ तो दगा दै गयो,
अंग्रेजी पढ़ि-पढ़ि के छोरी-छोरन को सत्यनाश है गयौ।
प्लेग-हैजा - फ्लू - जूड़ी - बुखार - तिजारी,
इन सब की चाची चली है टेस्ट मैच की बिमारी।" [२]

काकाजी कहते हैं कि, इस क्रिकेट पर पानी की तरह पैसा बहाया जाता है। वे कहते हैं कि, इतनी रकम अगर मुझे मिल जाए तो मैं डेढ़ मिनट में भारत की गरीबी दूर कर दूँ। और वैसे देखा जाय तो क्रिकेट के प्रति लोगों की दृष्टि भी हार-जीत के साथ बदलती रहती है।

"आज जीत गये तो भांगड़ा कर रहे हैं,
कल्लि हार गये तो गारी बकि रहे हैं।" [३]

भारतीय टीम ने जब विश्वकप जीत लिया था, तब किसी ने काकाजी से पूछा कि, आप अभी तक चुप कैसे बैठे हैं ? तो काकाजी ने जो

१. डा. मिथिलेश माहेश्वरी - "काका हाथरसी : एक समीक्षा यात्रा" (पृष्ठ ११२)।
२. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "पैरोडियाँ व कविताएँ" (पृष्ठ ५५)।
३. - वही - (पृष्ठ ५५)।

बात कही वही "क्रिकेट छक्के" कविता में है -

"प्रश्न करेंगे कपिल से, जब भी होगी भेंट,
लेकर आए विश्वकप, कहाँ रह गई प्लेट।
कहाँ रह गई प्लेट, प्लेट है कप की वाइफ।
कहने लगे कि, प्लेट वहीपर छूट गई थी,
ओलम्पिक में आ करके वह टूट गई थीं।" [१]

इससे अच्छा मजाक क्रिकेट को लेकर और क्या हो सकता है ?

९. फिल्मसिटी -

काकाजी के हास्य-व्यंग्य के तीरों से कोई भी विषय अछूता नहीं रह पाया फिर इतनी बड़ी फिल्मसिटी कैसे बच सकती है ? खासकर तब, जब उन्होंने कई फिल्मी गीत लिखे है। डा· मिथिलेश माहेश्वरी जी ने लिखा है - "काकाजी ने फिल्मी व्यंग्य के रूप में फिल्मी संसार में व्याप्त बुराईयों पर व्यंग्य किये हैं। फिल्मी रिश्ते-नातों पर काका के व्यंग्य उच्चकोटि के हैं। उन्होंने प्रत्येक ख्याति-प्राप्त फिल्मी कलाकार पर व्यंग्य लिए हैं। फिल्मी रिश्तोंपर व्यंग्य करते हुए काका कहते हैं कि, फिल्मों में एक स्थान पर एक अभिनेता एक अभिनेत्री के साथ पिता का अभिनय करता है तो वही अभिनेता उसी अभिनेत्री के साथ अन्य फिल्मों में पति, पुत्र, पुत्र, प्रेमी या भाई का अभिनय करता हैं।" [२]

फिल्मों के नामों को लेकर काकाजी ने अपनी "फिल्मी फुलवारी" में उसे सजाया है। इसमें कई फिल्मों के नामों को एक साथ एक लड़ी में पिरोते हुए काकाजी ने उन नामों में वैविध्य किस प्रकार है यह दिखाया है।

१· काका हाथरसी - "काका का दरबार" (पृष्ठ ६२)।
२· डा·मिथिलेश माहेश्वरी - "काका हाथरसी : एक समीक्षा यात्रा"(पृष्ठ १२९)

काकाजी ने सोच लिया कि, अब केंद्र में एक विशुद्ध फिल्मी मंत्रीमंडल बनेगा। उन्होंने अलग-अलग अभिनेता-अभिनेत्रीयों में मंत्रालयों का विभाजन करना शुरू किया। "फिल्मी सरकार जिंदाबाद" में वे कहते हैं -

"विदेश मंत्रालय सम्हालेंगी रेखा,
वही निश्चित करेंगी भारत चीन की सीमा-रेखा,
कोई विरोध करेगा तो उमराव-जान की शैली में कहेंगी
मैं कौन हूँ यह अच्छी तरह जान लीजिए,
बस-एक बार मेरा कहा मान लीजिए।" [१]

बडे-बडे अभिनेता भी काका की कलम से बच नहीं पाये। "फिल्मी होली" में काकाजी ने अभिनेताओं पर छिंटा कसी की है। जैसे -

<u>ऋषीकपूर</u> - ""बॉबी" ने चमका दिये, प्रेम मिली भरपूर।
बेटी जैसे लग रहे, बेटा ऋषी कपूर।।" [२]

<u>डैनी</u> - "नाक-नक्श नेपाल के, हिंदुस्तानी आर्ट।
फबता है तुमपर बहुत, खलनायक का पार्ट।।" [३]

<u>प्राण</u> - "तज करके खलनायकी, लिए करेक्टर रोल।
यह प्रण करके प्राण का, और बढ़ गया मोल।। [४]

अगर अभिनेता उनकी कलम से नहीं बचे तो अभिनेत्रीयाँ क्यों बचे ? उन्होंने एक "फिल्मी स्वयंवर" रच डाला। जैसे -

हेमामालिनी - "इसके साथ विवाह का, नहीं मिलें आनन्द,
बच्चे वाली बहू को, कैसे करें पसंद ?" [५]

---

१. काका हाथरसी - "काका का दरबार" (पृष्ठ २६)।
२. सं.डा.गिरिराजशरण अग्रवाल - "काकदूत व अन्य कविताऐं" (पृष्ठ १७६)।
३. - वही - (पृष्ठ १७६)।
४. - वही - (पृष्ठ १७७)।
५. काका हाथरसी - "काका का दरबार" (पृष्ठ ११)।

शबाना आज़मी - "रंग सम बढ़िया नहीं, अभिनय करती बेस्ट,
कैसी लाए दुल्हनियाँ, नाक सिकोड़े गेस्ट।" [१]

इस फिल्मी स्वयंवर में काकाजी ने अंत में रेखा को चुन लिया। वैसे भी फिल्मी सितारों का फिल्मी जीवन अल्प होता है। उनके मेकअप् को प्राधान्य देने के स्वभाव को भी व्यंग्य का निशाना बनाया है। एक तारिका अपनी नेल-पॉलिश सुखाने के लिए चलती कार से अपना एक हाथ कार के बाहर हिला रही थी, दूसरे से ड्राइविंग कर रही थी जिससे गलत दिशा निर्देश हो रहा था।

इस प्रकार फिल्म जगत हर एक पक्ष पर काकाजी ने अपने तीर चलाए हैं, फुलझड़ियाँ छोड़ी है।

१०. सामयिक घटनाएँ :

काकाजी ने सामयिक घटनाओं पर भी अपनी कविताओं के द्वारा हास्य-व्यंग्य किया है। जैसे - जब चंद्रपर मानवने पहला कदम रखा, तब काकाजी ने "धन्य अपोलो" नामक एक कविता लिखी जिसमें पार्वती भगवान शंकर से कहती हैं कि, अब चंद्र आप के माथेपर शोभा नहीं देता है। और अंत में मज़ाक करते हुए काकाजी लिखते हैं कि, अब तो काकी ने "करवाचौथ" कैंसल कर दी।

जब "पंचायती राज" योजना की शुरूआत हुई थी, उसपर काकाजी ने हास्यपूर्ण कविता लिखी -

"गाँव-गाँव में होय अब पंचायत के राज,
काका कवि तो खुश हुए काकीजी नाराज।
काकीजी नाराज, फैसला गलत किया है,

---

१. काका हाथरसी - "काका का दरबार" (पृष्ठ १२)।

महिलाओं को सिर्फ, तीस परसैन्ट दिया है।
अर्धांगिन है नारि, उन्हें समझाना होगा,
फिफ्टी-फिफ्टी आरक्षण दिलवाना होगा।"[१]

काकाजी जब विदेश में थे तब इंदिरा जी की हत्या हुई तो उन्होंने वापस आने से पहले वहाँ के श्रोताओं को अपनी कविता सुनाई जिससे वहाँ के सभी लोग भी भावविभोर हो गये थे।

११. अन्य -

काकाजी की कई ऐसी रचनाएँ है जिन्हें किसी विशेष कोटि में रखना सम्भव नहीं है। वे अलग-अलग विषयों पर अलग-अलग रूपों में लिखते आये है। इसलिए उन्हें अलग रूप में देखना ही ठीक रहेगा।

काकाजी ने रिश्तेदारों से तंग आकर आत्महत्या करने की कोशिश की लेकिन इसका अंजाम क्या हुआ, यह उन्होंने "असली और नकली" कविता में लिखा है - उन्होंने दो रुपये की संखिया खा ली और मुँह ढककर सो गये। म मन ही मन स्वर्ग की तैयारी भी कर ली। लेकिन -

"कहँ काका कविराम, जान ईश्वर ने रख ली,
नहीं मेरे हम क्योंकि संखिया निकली नकली।"[२]

अपनी एक कविता "प्रसिध्द प्रसंग" में काकाजी ने कौन से शहर में कौन सी चीज मशहूर है इस सवाल का जवाब लिखा है -

"नोट कीजिए हैं प्रसिध्द "मथुरा" का पेडा।
× × ×
लड्डू "संडीला" के हों, खुरचन "खुरजा" का।"[३]

१. काका हाथरसी - "काका की महफिल" (पृष्ठ १६)।
२. काका हाथरसी - "काका की फुलझडियाँ" (पृष्ठ ८१)।
३. काका हाथरसी - "जय बोलो बेईमान की" (पृष्ठ ३१)।

शिमला में जो समझौता हुआ था उसी को लेकर काकाजी ने एक कविता लिखी-शिमला कुण्डली। इसमें काकाजी कहते हैं -

"शिमला -
शिमला के लिए रजाई
रजाई के लिए रूई
रूई के लिए कपास
कपास के लिए खेत
खेत के लिए जमीन
जमीन के लिए युध्द
युध्द के लिए समझौता
समझौते के लिए शिखर-वार्ता
शिखर वार्ता के लिए शिमला। "[१]

भक्तिकाल से लेकर आजतक निराकार और साकार के बीच होनेवाले फर्क को लेकर विवाद चलते रहें। लेकिन आजतक उसकी सही-सही परिभाषा किसी ने नहीं की। काकाजी इन दोनों के बीच का फर्क अपनी "निराकार और साकार" कविता में अच्छी तरह से करते हैं जिसे सुनकर हँसी छूट पडती है -

"कहँ "काका" जो कार रखे, साकार वही है,
निराकार वह, जिसके घर में कार नहीं है। "[२]

काकाजी के सामने हमेशा कोई-न-कोई सवाल खड़ा हो जाता है। सभी सवालों के जवाब प्राप्त नहीं कर सकतें, तो वह सवाल वे पाठकों के सम्मुख रखते हे -

१. काका हाथरसी - "जय बोलो बेईमान की" (पृष्ठ ४१)।
२. काका हाथरसी - "कक्के के छक्के" (पृष्ठ ३५)।

"इनदान में इत्र है,
पानदान में पान,
मच्छरदानी क्यों कहें, उसमें है इंसान ? " [१]

सचमुच इस सवाल का जवाब तो किसी के पास भी नहीं हो सकता।

जब गेहूँ पर मंदी का दौर चल रहा था, काकाजी भला चुप रह सकते थे ? उन्होंने लिखा -

"कल खाय तो आज खा,
आज खाय तो अब्ब,
गेहूँ मंदे है गए, फेरि खाएगा कब्ब ? " [२]

आज तक दोस्त की सही परिभाषा क्या कोई कर सका है ? काकाजी ने सच्चे दोस्त की पहचान कितने हल्के-फुल्के ढंग से समझायी है -

"घड़ी, अटैची दोस्त से,
ले लीजिए उधार,
कभी न माँगे आप से, समझो सच्चा यार।" [३]

काकाजी ने एक शब्द को लेकर उसके विभिन्न रूप से प्रयोग कैसे हो सकते है वह दिखाया है। अपनी "बात बतंगड़" कविता में "बात" के बारे में उन्होंने लिखा है -

"बात-बात में बन गए, बातों के कुछ छन्द,
बात पकड़ कर लिजिए, बातों का आनन्द।
बातों का आनन्द, बात बिन महफिल सूनी,
बात बनानेवाले को, कहते बातूनी।" [४]

---

१. काका हाथरसी - "लूटनीति मंथन करी" (पृष्ठ २०)।
२. - वही - (पृष्ठ ३७)।
३. - वही - (पृष्ठ ५०)।
४. काका हाथरसी - "यार सप्तक" (पृष्ठ ७०)।

काकाजी ने जिस प्रकार एक शब्द को लेकर लिखा उसी प्रकार उन्होंने "लिंग भेद" कविता में पुरुषों के इस्तमाल की चीजें के स्त्रीलिंगी नाम और स्त्रियों के इस्तमाल की चीजों के पुल्लिंगी नामों का जिक्र किया है जैसे - दाढ़ी, टोपी-पगड़ी, पाकिट, जाकिट, मूँछ और पर्स, लहंगा, ब्लाउज आदि। इसी प्रकार नाम के अनुरूप गुण न होनेवाले व्यक्तियों की सूची "नाम बड़े, दर्शन छोटे" में दे दी है। जैसे -

"कह काका कवि, "दयाराम" जी मारे मच्छर,
विद्याधर को भैंस बराबर काला अक्षर।" [१]

एकबार चोरी करने के लिए चोर एक गली में घुस गये और पकड़े गये। लेकिन उनकी होशियारी "राष्ट्रगान का लाभ" में काकाजी ने बतायी है -

"चोरों ने "जन-गण-मन" गाना शुरू कर दिया
खड़ी हो गई भीड़, "अटैंशन" में सब आकर
चोर भग गए, राष्ट्रगान का लाभ उठाकर।" [२]

एक जगह कथा-प्रवचन चल रहा था और पंडितजी बता रहे थे कि, नर का नाम आम तौर पर नारी के पश्चात् ही आता है। जैसे - राधेश्याम, गौरीशंकर, लक्ष्मीनारायण, सीताराम आदि। लेकिन -

"कहं "काका" शंका कर बैठा मेकू मिस्त्री
"शास्त्री" में तो पहिले "शा" है पीछे "स्त्री"।" [३]

काकाजी को एक बार वीर रस के कविसम्मेलन में बुलाया गया था। काका ठहरे हास्य रस के कवि, वीर रस की कविता कैसे करते ? फिर भी उनका हास्य रस वीर रस में समा गया और उन्होंने मैदान मार लिया। "क्रांति का बिगुल" वह वह कविता थी जिसकी प्रशंसा हर किसी ने की -

---

१. सं.डा.गिरिराजशरण अग्रवाल - "काका की विशिष्ठ रचनाएँ" (पृष्ठ ५९)।
२. काका हाथरसी - "कक्के के छक्के" (पृष्ठ ५५)।
३. - वही - (पृष्ठ ६५)।
४. सं.डा.गिरिराजशरण अग्रवाल - "काका की विशिष्ठ रचनाएँ" (पृष्ठ १६३)।

"नाना साब पेशवा का हुक्का मैं ही तो भरता था,
झाँसी वाली रानी के घोडे की मालिश करता था।
मैंने मंगल पांडे को विप्लव की भंग पिलाई थी,
वीर तात्या टोपे को मैंने ही जंग सिखाई थी।" [१]

आज-कल हम किसी ऑफिस में जाते हैं तो फाईलों के ढ़ेर पाते हैं। यहाँतक कि, इंसान को भी फाईल के नम्बर से जाता जाता है। इसी फाइल का महत्व "फाईल महिमा" में काकाजी ने बताया है -

"फाइल, तू बड़भागिनी, कौन तपस्या कीन,
नेता अफसर, क्लर्क सब हैं तेरे आधीन।
है तेरे आधीन, मिनिस्टर बाहर जाते
पत्नी को घर छोड़, साथ तुझको ले जाते।" [२]

इसी फाईल का आज-कल कर्मचारी बोझ ढ़ो रहे हैं। इसका वर्णन करते हुए काकाजी ने फिल्म "एक कली मुसकाई" के "न तुम बेवफा हो" इस फिल्मी धुन की पैरोड़ी में लिखा है -

"न तुम ही गधे हो, न हम ही गधे हैं,
मगर क्या करें फाईलों से लदे हैं।" [३]

क्या इन सभी अलग-अलग विषयों को एक विशेष कोटि में रखना सम्भव था ? इनका आस्वाद तभी लिया जा सकता है जब इन्हें स्वतंत्र रूप में स्वीकार कर इसके महत्व को पहचाना जाए।

काका की काव्यभाषा :

काकाजी के काव्य में कई भाषाओं के शब्दों का प्रयोग हुआ है लेकिन सबसे ज्यादा अंग्रेजी और ब्रज भाषा का प्रभाव उनके काव्य में देखा जा

१. सं.डा.गिरिराजशरण अग्रवाल - "काका की विशिष्ठ रचनाएँ" (पृष्ठ १६३)।
२. काका हाथरसी - "कक्के के छक्के" (पृष्ठ ४४)।
३. सं.डा.गिरिराजशरण अग्रवाल - पैरोडीयाँ व कविताएँ" (पृष्ठ २५१)।

सकता है। अंग्रेजी भाषा के प्रयोग के बारे में डा॰गिरिराजशरण अग्रवालजी लिखते हैं - "काका का एक कौशल और भी है। उन्होंने अंग्रेजी के शब्दों को पकड़कर तथाकथित सामाजिक शिष्टता के भौंड़ेपन पर भी आघात किया है। उन्होंने इन शब्दों के द्वारा समाज में बुरी तरह से छाई हुई झूठी शिष्टता और छिछले मर्यादा बोध को तिरस्कृत किया है और साथ ही अंग्रेजी शब्दों को लय छंद के अनुसार हिन्दी में उन्हें इस तरह जड़ दिया है कि, इससे पाठक के मन में उन परिचित शब्दों का एक नया रूप प्रकट हो जाता है। इन प्रयोगों में उनकी विशेषता इन शब्दों के ध्वनि वैशिष्ट्य को सही रूप में पकड़ने की है।"[१]

शब्दप्रयोग -

अंग्रेजी शब्द - रेग्युलर, फ़ेल, जीरो, हिरो, फादर, रिजेक्ट, मोनोपोली, इंडिकेट, क्लासीकल, युजफूल, गुडफिल आदि।

अंग्रेजी वाक्य - टीट फॉर टैट, यू विल माई डाग, मे आइ कम इन सर आदि।

उर्दू शब्द - बेनज़ीर, हक़, बख्शिश, ख़ता, फ़िज़ा, बेगम आदि।

ब्रज शब्द - भयौ, मारयौ, कोऊ, आवै, होरी, मोहि, तिहारो, बरनन, काहू, समुझावहिं आदि।

बंगला शब्द - शिर, शरश्वती, आदि।
पंजाबी शब्द - तुसी, देणा, गड्डी, लेवंगा आदि।

इसी प्रकार उनके साहित्य में मराठी, गुजराती आदि भाषाओं के शब्द भी आये है।

काकाजी की कविता की विशेषता बताते हुए डा॰बरसानेलाल चतुर्वेदी जी ने लिखा है - "सर्वसाधारण में इनकी कविता की लोकप्रियता का रहस्य

---

१. सं॰डा॰गिरिराजशरण अग्रवाल - "काका हाथरसी : अभिनंदन ग्रंथ"(पृष्ठ १०१)

इनकी कविता का प्रसाद गुण है। कलात्मक रूप से प्रतीकात्मक रूप से सूचित व्यंग्य ही श्रेष्ठ होते है। "[१]

मुहावरे -

काकाजी ने अपने काव्य में ब्रज भाषा के - छक्के छुड़ाना, बुध्दि ठस् होना, धता बताना, सपोटा मारना, नैया डूबना, रंग में दल जाना, अंटी में आग लगना आदि मुहावरों का प्रयोग किया है। लेकिन कहीं-कहीं वे इतने घुल-मिल गये हैं कि, उनके वहाँ होने के बारे में पता तक नहीं चलता।

विचित्र नामावली -

हास्य की निर्मिती के लिए काकाजी ने विचित्र नामों का प्रयोग किया है। जैसे - घोटम घोट, हरफूल, अशर्फीलाल, हवेलीराम, त्रिगुणाचार्य, मक्खनलाल, भैडारसिंह, घटोरचंद, यादराम, पियक्कडचंद, मिस किसमिस आदि यह सूची बहुत लम्बी बन सकती है। डा•अमरेंद्र प्रसाद अग्रवाल जी कहते है - "इसमें कोई संदेह नहीं कि, ऐसे हास्योत्पादक नामों के श्रवण-पठन से श्रोता - पाठक तीव्र अट्टाहास कर उठेंगे, परंतु साहित्यिक मर्यादा के ख्याल से से ऐसे नाम कदाई उपयुक्त नहीं है। काका हाथरसी जैसे महाकवि के लिए इन विचित्र हास्योत्पादक नामों के प्रयोग ने न केवल उनकी गरिमा को कम किया है, अपितु उनकी रचनाधर्मिता के लिए कलंक ही साबित हुआ है।"[२] अग्रवाल जी के इस मत से मैं सहमत नहीं हूँ क्योंकि, बचपन में एक बार काकाजी ने कविता में बारात के समय "चन्दो चच्ची" शब्द का इस्तमाल सिर्फ तुक मिलाने के लिए किया था लेकिन वहाँ पर झगड़ा खड़ा हो गया और पूरी बारात खाली पेट सो गई। और फिर अगर श्रोता या पाठकों के मनोरंजन के लिए ही अगर कविता लिखी जानी है तो फिर इस प्रकार के नामों पर कोई आपत्ति नहीं

१• डा•बरसानेलाल चतुर्वेदी - "आधुनिक हिंदी काव्य में व्यंग्य" (पृष्ठ १०३)।

२• डा•अमरेंद्रप्रसाद अग्रवाल - "काका हाथरसी : व्यक्तित्व और साहित्य" (पृष्ठ २८७)।

आनी चाहिए क्योंकि हास्य-व्यंग्य के कवि का मूल उद्देश्य भी तो लोगों को हँसाना ही होता है। इन नामों में अश्लीलता वगैरह तो है ही नहीं तो फिर साहित्यिक मर्यादा का सवाल आता कहाँ से है ?

अलंकार -

काकाजी ने काव्य में अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, पुनरुक्ति-प्रकाश, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, स्मरण, सन्देह, उल्लेख, उदाहरण, विरोधाभास, अतिशयोक्ति आदि कई अलंकारों के प्रयोग हम देख सकते हैं।

अनुप्रास - "कान कीर्ति को ढूँढ़ने, क्यों जाते हो दूर,
कान-कृपा से "कानपुर" शहर हुआ मशहूर।" [1]

यमक - "हरे - हरे की माला जपकर,
हरे - हरे नोटों को खींचो।" [2]

पहले हरे-हरे का अर्थ "ईश्वर" और दूसरे "हरे-हरे" का अर्थ "हरे रंग के" यह है।

छन्द -

काकाजी के काव्य में मात्रिक छन्द जैसे - दोहा, सोरठा, चौपाई, गीतिका, कुंडलियाँ, रोला आदि, वर्णिक छन्द जैसे - सवैया, घनाक्षरी, वसन्ततिलका आदि का प्रयोग हुआ है। कहीं-कहीं काकाजी के मुक्त छंद कविता में लय पायी गयी है और छन्द मुक्त कविताएँ भी काकाजी ने लिखी है।

१. सं.डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "काका की विशिष्ठ रचनाएँ"(पृष्ठ ११८)।
२.

काव्यरूप -

काकाजी की कविताओं के कई रूप हम देख सकते है। जैसे - पैरोडियाँ, कवियों की पंक्तियोंपर फब्तियाँ, मिनी कविताएँ, शेर आदि।

फिल्मी पैरोडियाँ - मेरे अँगने में . . . . .

"मेरे अँगने में तुम्हारा क्या काम है,
जिसने तोड़ी पार्टी, वो नेता बदनाम है॥
जिसका जिजा मंत्री, उसका भी बड़ा नाम है।
शासन में घुस जाओ, सर्विस का क्या काम है!" [१]

कवियों की पंक्तियों पर फब्तियाँ -

"कारवाँ गुजर गया, गुबार देखते रहे . . . . .(नीरज)
(तो हम क्या करें, टाइमपर क्यों नहीं आए आप?)" [२]

"प्रिय, एक बार तुम आ जाओ तो अंचल भर सुहाग ओढ़ूँ . .(माया)
(वे नहीं आएगे, ओढ़ने को कम्बल भेज दिया है।)" [३]

मिनी कविताएँ -

"भ्रष्टाचारी बॉस, दास को रिश्वत लेते नहीं टोकता,
चोर को देखकर चोर भी नहीं चौंकता,
इसी सिध्दांत को मान्यता देते हुए
काका कवि का कुत्ता दाढ़ीवालों पर नहीं भौंकता।" [४]

---

१. काका हाथरसी - "काका की चौपाल" (पृष्ठ १५३)।
२. सं. डा. गिरिराजशरण अग्रवाल - "पैरोडियाँ व कविताएँ" (पृष्ठ ३५)।
३. - वही - (पृष्ठ ३५)।
४. - वही - (पृष्ठ १४२)।

और -

"क्या खता हमसे हुई, जो खत का आना बन्द है,
आप ही नाराज है, या डाकखाना बन्द है ? " [१]

इस प्रकार सभी सर्गों में, सभी विषयोंपर, सभी प्रकारों से काकाजी ने हास्य-व्यंग्यबाण छोड़े, हैं। इन फुलझड़ियों से काकाजी के साहित्य की बहुविधता को देखा जा सकता है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि, काकाजी ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से समाज के कोने-कोन में देखा, जहाँपर भी गन्दगी दिखाई दी उसको अपने हास्य-व्यंग्य की मधुर मार से साफ किया। उनकी कलम से कोई भी विषय छूट नहीं पाया है। उन्होंने ऐसे विषयोंपर भी काव्य रचनाएँ की है जिनके बारे में हम कभी सोचते भी नहीं है। उनके अनुभव का क्षेत्र इतना व्यापक है कि, उनके द्वारा लिखी हर विषय की कविता को सिर्फ एक अध्याय में समेटना कठिण है। फिर भी हास्य-व्यंग्य के सहारे इतने सारे विषयोंपर अपनी कलम चलाने का जो काम काकाजी ने किया है वह सचमुच स्पृहणीय है। इसके द्वारा ही हम उनके हास्य-व्यंग्य लिखनेपर होनेवाले अधिकार को देख सकते है। आधुनिक काल में हास्य-व्यंग्य के जनक काकाजी का साहित्य हिन्दी साहित्य में अपना एक अलग महत्व रखता है।

१. काका हाथरसी - "काका की महफिल" (पृष्ठ २६)।